**R**:—आने वाले कल की तुम तस्वीरहो..... ॐ पिताश्री 6/9/62

ओम शांति! गीत सुनने से नशा चढ़ना चाहिए। कहते हैं, तुम ही सबकी झोली भर दोगे। तुम बच्चे जानते हो कि अभी यह हमारी झोली भर रहे हैं अविनाशी ज्ञान रत्नों से। अब प्रश्न उठता है कि हम और किसकी झोली भरते हैं? इतनी सर्विस करते हैं? यदि और की झोली हम न भरते हैं तो गोया हमारी झोली भी नहीं भरती है। ऐसे अंदर में ..... चाहिए। हम किसी की झोली नहीं भर सकते, हमारी झोली नहीं भरती तो हमको खुशी भी न रहेगी। खुशी उनको होगी जो दूसरों की झोली भरेंगे; क्योंकि जिसकी झोली भरेंगे, तो ज़रूर उनकी आशीर्वाद मिलेगी। कोई को तुम ..... दो, कहेंगे ईश्वर तेरा भला करे; क्योंकि ईश्वर अर्थ गरीब को देते हैं। जब तक किसी की झोली न भरें तो आशीर्वाद क्यों मिलेगी। अपन साथ बातें करनी होती हैं कि मैं क्या कर रहा हूँ। क्योंकि अभी हमको बनना है महादानी। दुनिया में तो जो विनाशी धन बहुत दान करते हैं, उनको महादानी कहा जाता है। यहाँ हम ब्राह्मण कुलभूषण महादानी किसको कहेंगे? जो इस अविनाशी ज्ञान रत्नों से औरों की झोली भरेंगे। बाबा हमारी झोली भरते हैं, हम फिर औरों की भरेंगे। प्रिंस—प्रिंसेज़ बनेंगे तब, जब औरों की झोली भरेंगे। जो बहुत धन दान करेंगे, उनको उजूरा तो मिलेगा ना। इसका मतलब यह नहीं समझना कि केवल साहूकार ही ज़्यादा दान कर सकते हैं, नहीं। बाबा ने समझाया है कि साहूकार दान करते हैं और गरीब भी यथा योग्य—यथा शक्ति दान करते हैं। तो गरीब को भी इतना ही फल मिलता है जितना लखपति को मिलेगा। ऐसे नहीं कि गरीब को नहीं मिल सकता। ऐसे नहीं साहूकार बहुत दान करते हैं, तो वही साहूकार बनेंगे, नहीं। गरीब भी यथाशक्ति दान करते हैं तो बड़े—2 साहूकारों पास जन्म लेते हैं। वो तो हो गई विनाशी धन की बात। यहां तो फिर है अविनाशी ज्ञान का दान। ऐसे कोई मत समझे हम थोड़ा धन भी दान करेंगे तो बहुत मिलेगा, नहीं। यह फिर उल्टी समझ हो गई। इसमें फिर जो जितना—2 झोली भरने की सर्विस करते हैं उतना उनको मिलता है; क्योंकि इसमें पढ़ाई की बात है। वो विनाशी धन अलग बात है, वो मिसाल उठाना रांग है। यहां तो जो जितना अविनाशी ज्ञान रत्नों की झोली भरेंगे। यह सर्विस कोई की छिपी नहीं रह सकती। ब्राह्मण कुलभूषण .... है सबसे अधिक सवर्सि कौन करते हैं। बाबा सर्विस करना सिखलाते हैं तो हमको भी ज्ञानी आत्मा बन बहुतों की सर्विस करनी चाहिए। विचार—सागर—मंथन करने की टेव चाहिए। विचार—सागर—मंथन होता ही है एकांत में। सन्यासी लोग भी एकांत पसंद करते हैं। वो तो तत्वों को ईश्वर मानते हैं, इसलिए अपने को ब्रह्मज्ञानी, तत्वज्ञानी कहलाते हैं। ब्रह्म को भी याद करने के लिए एकांत में जाते हैं। शास्त्र आदि तो यहां भी पढ़ सकते हैं। शास्त्र तो हैं कर्मकांड के। वे लोग चाहते ही मुक्ति हैं। मुक्ति के लिए चाहिए योग। शास्त्र आदि तो गृहस्थ व्यवहार में भी पढ़ते रहते हैं। यह बाहर जाते ही हैं योग के लिए। हम ब्रह्म में लीन हो जावें, जिससे निकले हैं, इसलिए वो बाहर एकांत में निकल जाते हैं। शरह में तो वायुमण्डल अशुद्ध रहता है। उनको कोई मूर्ख नहीं कहेंगे। वो भी भारत का कल्याण करते हैं, पवित्र रहते हैं। अभी तो सब पतित तमोप्रधान बुद्धि है। भक्त लोग भी एकांत पसंद करते हैं। वानप्रस्थ अवस्था में किनारा कर लेते हैं। सन्यासियों का संग जाकर पकड़ते हैं। वानप्रस्थियों के लिए आश्रम बारह बनाया जाता है एकांत में। अच्छा यहां हमको एकांत कैसे मिले? हम कोई सन्यासी तो नहीं जो जंगल आदि में जावें। गृहस्थ व्यवहार में रहते यह तो बड़ा कठिन है। तो बाप बैठ बतलाते हैं कि नींद को जीतने वाले बनो। बाबा जानते हैं जिनको फॉलो न करना होगा, वे कभी नहीं करेंगे। यह बच्चों को राय मिलती है ऊपर से। इस ब्रह्मा को भी राय देने वाला वो शिवबाबा है। ब्रह्मा के लिए कहते हैं, ब्रह्मा उतर आए तो भी तुम न मानेंगे। यह किसी को पता नहीं है मत किसकी लेनी है। ऊँच मत है शिव की जो ब्रह्मा को देते हैं। ब्रह्मा को रचने वाला

वो शिव है। तो वो बाबा हम, तुम, सबको डायरैक्शन देते हैं, इसमें एकांत अवश्य चाहिए। एकांत में ही विचार–सागर –मंथन हो सकते है। एकांत अर्थात् एक को याद करने में बहुत मज़ा आता है। उस एक से ही वर्सा मिलता है। वो लोग तो ब्रह्मतत्व को भगवान समझ याद करते हैं। हमतो जानते हैं, हमको शिवबाबा से मुक्ति–जीवनमुक्ति मिलती है, उनको याद करना है। अब ..... का समय है। अमृतवेले का। अब बाबा ने कहा है, नींद को जीतने वाले बनो। दिन में तो वायुमण्डल खराब रहता है। रात को भी बारह/एक बजे तक गंदा वायब्रेशन (वायुमण्डल) रहता है। अभी बाबा की डायरैक्शन निकलेगी। बाबा सबसे पूछेंगे, हरेक जो भी ब्राह्मण कुलभूषण हैं, जो सरेण्डर किये हुये हैं। जो समझते हैं बरोबर हम ..... बच्चे हैं और बाबा को सब पोतामेल भी भेज देते हैं, इस जन्म की जीवन कहानी भी भेज देते हैं, तो ऐसे बच्चों को पूरा समाचार देना हैं। हम रात को कितना समय जागे, कितना विचार–सागर–मंथन किया। ऐसे नहीं कि सन्यासियों की तरह आसन लगा बैठना है। बहुत भगत लोग रात को शीघ्र सवेरे उठकर माला जपतें हैं। हमारा लौकिक बाप कौने में अंदर ..... बनकर बैठ माला जपते थे। कुटिया में बैठने से एकांत होती तो फिर सन्यासी लोग बाहर क्यों जाते? तो अब बाप समझाते हैं, लाडले बच्चे, नींद को जीतने वाले बच्चे रात को एकांत बहुत अच्छी होती है। अमृतवेला नाम क्यों रखा है? क्योंकि शिवबाबा कहते हैं, अमृत पिलाने वाला मैं एक ही हूँ। शास्त्र तो सब सुनाते हैं, वे कोई बुरी बात नहीं; परंतु वे ऐसे नहीं कहते कि इससे तुम राजाओं का राजा, पवित्र दुनिया का मालिक बनेंगे। एक गीता ही है जिससे ..... देवता बन जाता है। देवताएँ होते ही हैं सतयुग में। तो अवश्य मनुष्य से देवता संगम पर ही बने होंगे। अब बाप तो मनुष्य से देवता बनाने वाला है उनकी मत पर चलना पड़े; क्योंकि वो फिर धर्मराज भी है। मनुष्य जानते हैं भगवान धर्मराज भी है। कोई किसी को मारता है तो कहते हैं, भगवान तुमसे हिसाब लेगा। भगवान का नाम बहुत लेते हैं। भगवान का ही कसम उठावेंगे। देखना, भगवान बदला लेगा। क्योंकि समझते हैं, ईश्वर ही सब कुछ जानते हैं। यह ..... कहा जाता है; क्योंकि समझते हैं, ईश्वर ही सज़ा देते हैं; परंतु किस रूप में? वो बाप तो बहुत रमदिल है, धर्मराज .....समें बहुत सज़ा देते हैं। इसलिए उनको सुप्रीम जज, धर्मराज कहते हैं। दुनिया यह नहीं जानती कि ..... धर्मराज भी है। कसम भी उनका उठाते हैं। इनडायरैक्ट मनुष्यों की बुद्धि में आता है; परंतु सर्वव्यापी का ज्ञान होने से पूरा निर्णय नहीं कर सकते। तुम जानते हो, गर्भजेल में में दण्ड देने वाला कोई तो होगा ना। भगवान धर्मराज रूप में ..... वो धर्मराज का रूप भी तुम बच्चों को दिखलाते हैं। भल फीचर्स (शक्लें) यहीं हैं; परंतु वे धर्मराज का ..... उसने वाला होगा। बाबा ने सिखलाया है, कैसे मैं धर्मराज रूप में दण्ड देता हूँ। तो अब तुम बच्चों को डर रहना चाहिए। मेरा बनकर मेरी राय पर न चलेंगे तो दण्ड बहुत कड़ा खावेंगे, बता देता हूँ। मेरे यज्ञ में वह, मेरे बनकर और फिर ज्ञान की धारणा न करेंगे और ही विघ्न डालेंगे तो बहुत दण्ड भोगेंगे। मैं शिवबाबा और फिर धर्मराज भी हूँ। ..... रहता हूँ, कोई विकर्म मत करो, नहीं तो मैं स्वयं दण्ड दूँगा। कयामत के समय भगवान सबका हिसाब चुक्तू करेंगे। भगवान धर्मराज के रूप में यहाँ हैं। मनुष्य तो नहीं समझते कि कयामत के समय हिसाब चुक्तू होना है। जो ..... धर्मराज ..... होगा। भगवान, धर्मराज एक ही है। भगवान ही देखता है, भगवान ही दण्ड देगा। ज्ञान की धारणा होती है तो ..... बुद्धि है। बाबा ने कई बार समझाया है, सवेरे उठना बहुत अच्छा है। ..... .....
.....
.....
.....

..... उसी समय याद ....रहेंगे। भल माया के तूफान खूब आयेंगे; क्योंकि माया भी किसी को छोड़ती नहीं है। ..... तुम यदि डायरैक्शन पर न चलेंगे तो कब उन्नति न होगी। बाबा ..... करते हैं, हरेक लिख .... रात को कितना समय हम विचार–सागर–मंथर करता हूँ। टाइम भी लिखे तो बाबा समझे। यह ब्राह्मणों के लिए डायरैक्शन है। तुम अनुभव ..... , बहुत सुख महसूस होगा। विवेक भी कहता है, जावेंगे वे जो सर्विस में तत्पर होंगे। बाबा कहते हैं, नींद फिट जानी चाहिए। 3घंटा नींद होनी चाहिए, दिन में भल करें। रात को सवेरे (शीघ्र से जावे) बाबा के डायरैक्शन पर फरमानबरदार बच्चे ही चल सकते हैं। बाबा ऊपर से भी पूछ सकते हैं कि फलाना रात को उठकर विचार–सागर–मंथन करता हैं या नहीं? रात को उठकर विचार–सागर–मंथन न करेंगे तो कायदे सिर भाषण भी होगा नहीं। ना..... बुद्धि का ताला बंद ..... देंगे। पुरुषार्थ करना चाहिए। टेव पढ़ने में भी कई मास, वर्ष लग जाते हैं। ऐसे मत समझो, आठ/दस दिन में आदत पड़ जावेगी, नहीं। बाबा कहते हैं, बहुत समय से पूँछ जो उल्टा हुआ है, उसको फिर सीधा करने में मेहनत लगती है। रात को ..... विचार–सागर–मंथन चले तब खुशी होगी। उठे और विचार–सागर–मंथन के बदली और–2 बातें सामने आ जायें तो थक जावेंगे, मज़ा नहीं आवेगा। माया के विघ्न बहुत आवेंगे। पहले–2 शौक चाहिए धन दान करने का। फिन नम्बरवार ..... हैं। जैसे हमरा भंडारी है, इनसे सब खुश होते हैं। अवश्य सुख मिलना है ना। कोई सर्विस ही न करेंगे तो महिमा कैसे करेंगे? ..... काम करने से उनका आधा फल खलास हो जाता है। खुशी से करना चाहिए। हम बाबा की सेवा करते हैं, जिस बाबा से हमको राजई मिलती है। रात को विचार–सागर–मंथन उनका होगा, जो सर्विस पर होंगे, नहीं तो पाप ही सामने आते रहेंगे। बाबा स्वयं कहते हैं, पाप किए तो फिर अरे से लिखाऊँगा। यह है कड़ी से कड़ी सज़ा। भल बच्चे हैं; परंतु सज़ा प्रजा से भी अधिक खाते हैं। बच्चे बनकर फिर कोई पाप करते हैं तो सौ गुणा दण्ड हो जाता है। कोई पाप करते हैं और फौरन बाबा को नहीं लिखते, अंदर बीमारी रख लेते हैं, तो वो बीमारी पक्की हो जाती है। इसलिए फौरना लिखना चाहिए। शिवबाबा को साकार द्वारा ही चाहिए। बाबा कहते हैं, मेरे पास साकार द्वारा आना चाहिए। बाप अपने बच्चों को डिससर्विस (अपमान) थोड़े ही सहन कर सकेंगे। यह सब बातें समझते नहीं, न डर है। धर्मराज बाबा देखते तो हैं ना। बाबा के पास बहुत रिपोर्ट्स आती हैं। किसी को चीज़ नहीं मिलती तो रो पड़ते। बिल्कुल पाई पैसे की अवस्था है। भल कोई साहूकार थे। पैसे दिये, कोई गरीब थे। जैसे मिसाल यह पपर(दादी) हैं। पाई पैसा लाई होगी। इनका भी हिसाब नहीं है जितना बाबा का हिसाब है। मम्मा गरीब थी, फिर कितनी ऊँच चढ़ गई है। कोई चावल की मुठ्ठी देते हैं तो महल मिल जाते हैं। इसमें यह अभिमान भी किसको न आना चाहिए कि हमने तो सबकुछ दिया है। इसलिए हमको सब सहूलियतें होनी चाहिए। जो कुछ दिया, वो तुम खा गये, फिर पद कुछ भी न मिलेगा। यह तो तुम लेते हो। देने का अहंकार थोड़े ही आना चाहिए। हमने पैसे दिये हैं, इसलिए एवज़ा मिलना चाहिए। अच्छी तरह बैठे यहां खाया तो खेल खलास है। बाबा सब बातें समझा देते हैं। बच्चों को विचार–सागर–मंथन करना है। सारी सृष्टि का चक्र कैसे फिरता है, यह तुम बच्चे ही जानते हो। 5000वर्ष की बात को लाखों वर्ष ..... है। लाखों वर्ष की बात किसको याद भी न रहे। अभी देखो, भूकम्प होते रहते हैं। कल भी अखबार में था, 5000वर्ष पहले ऐसे हुआ था, बस। इसके पहले की बात बता न सकेंगे। जब विनाश हुआ होगा तो कितने मरे होंगे। अभी यह प्राकृतिक आपदाएँ होंगे, तो कितने मरेंगे। तो यह भी लिखना चाहिए। तुमको पता है, महाभारी लड़ाई में कितने मरे थे। 5000वर्ष की बात है। हम बतलाते हैं, 4½ सौ करोड़ मरे थे। देखो, बाबा का रात को विचार–सागर–मंथन तो चलता है ना। तो क्यों न कोई

सुजान बच्चा लिख दे, विचार–सागर–मंथन करने वाले ही ऐसी–2 बातें निकालेंगे। बाबा तो विचार–सागर–मंथन करते हैं। सुनाते हैं, ..... से भी बहुत प्वाइंट्स निकलती हैं। ..... रात को जागना बहुत अच्छा है। बहुत मज़ा आवेगा। जागते रहो, बाबा से बातें करते रहो। यह ..... को टेव होगी विचार–सागर–मंथन करने की। तब ही बाबा जगावेंगा भी। बाबा कोई जगाते नहीं हैं यह भी ड्रामा में नूँध है। अखबारों में बहुत पड़ता है। कोई समझते हैं अखबार ..... सकते हैं। उन्हों को ..... चाहिए। .....
.....
मरे थे। अभी इस युद्ध में फिर से मरेंगे। यह वही महाभारी लड़ाई है। ..... देखेंगे तो कहेंगे, यह यह तो बहुत अच्छी बात है। बोलो, सारी सृष्टि का ..... ..... यदि तुम जानना चाहो तो हम बता सकते हैं। ऐसी–2 बातें पैसे देकर भी डलवानी चाहिए। तो बहुत फायदा हो सकता है। आपे ही तो किसकी बुद्धि चलती नहीं। बाबा कहते हैं, ..... मंडली के पास जाकर लिट्रेचर आदि .... समझाओ। बाबा की डायरैक्शन अमल में लानी चाहिए। सर्विस बहुत शौक चाहिए। जो अमृत पीकर और फिर विघ्न डालते हैं। मत पर नहीं चलते हैं तो धर्मराज बाबा किसको छोड़ेंगे नहीं। मत मिलती है तो ..... पर चलना चाहिए ना। भगवान कहे, यह काम करो और न करें तो उन जैसा कमबख्त कोई नहीं। ..... है, तो डर रहना चाहिए। उनको तो हर घड़ी याद करना चाहिए। कोई पाप कर्म ..... न करना चाहिए। ..... उल्टी–सुल्टी बातें सुनाएँ तो सुनना न चाहिए। समझो, यह हमारा ..... है। ..... बाबा झट बतावेंगे कि यह बात झूठी है या सच्ची है। कहाँ अपनी निन्दा सुन पढ़ाई छोड़ दे तो बहुत नुकसान कर देंगे। ऐसे बहुत रूठ जाते हैं। अरे, तुम्हारा काम है ज्ञान से, न कि इन बातों से। कृष्ण .... कि...ने ..... पहले तुम अपना योग तो लगाओ। बाबा की मत पर चलने से बेड़ा पार हो जाये। ..... न चलते तो बेड़ा कर्ग हो ..... , पद भ्रष्ट हो पड़ते। शिवबाबा को याद कर, आकर मत लेनी चाहिए। बाबा कहते हैं, मेरी बहुत ..... होने से बुद्धि का ताला बंद हो जाता है। बाबा की सर्विस करते–2 विघ्न पड़ते हैं .... कर्म ..... बाबा .... हैं, मैं उनकी बुद्धि का ताला भी बंद कर देता हूँ। तुम्हारा काम है मत पर चलना। बाबा कहे, ..... खोदो हाँ, बाबा जो आज्ञा। अब शिवबाबा भी यह बेसमझ तो नहीं है ना। ज्ञानी तू आत्मा को तो ..... नहीं लगावेंगे। बाबा भी समझ कर कहेंगे। कोई समय परीक्षा भी लेते हैं। तो समझना चाहिए ..... वो कब उल्टा काम न करावेगा। बाबा ऐसे काम तो बच्चों से कराते भी नहीं हैं। अच्छा ..... बापदादा का डायरैक्शन– उर्दू गीता, योग का किताब अँग्रेजी, ..... यह सब लिट्रेचर अच्छा बनाया हुआ है। जिन्हें को ..... कोई भी तो समाचार. ....को देना। न मिला हो तो दिल्ली से मंगाना। जिनको मिला है उन्होंने ..... के समाचार न ..... बुद्धि ..... हैं। जबकि दशहरा आ रहा है और दीपमाला आ रही है। क्यों न पहले से ही ....पक बनाया ..... जो करना है सो लिख बाबा को भेज दो तो पता पड़े कि बराबर ....क्ति से ..... करते हो। .....
..... ॐ